Dr. S.K. Singh
Mob.-9431449951

व्याप्ति विनिश्चय या व्याप्ति स्थापना (बौद्ध मत)

→ बौद्ध मत में व्याप्ति-विनिश्चय की चर्चा धर्मकीर्ति और उनके उत्तरवर्ती आचार्यों की कृतियों में पाई जाती है। धर्मकीर्ति के अनुसार साधन (हेतु) और साध्य के बीच के संबंध के ज्ञान के लिये साध्य और साधन (हेतु) के स्वभाव प्रतिबन्ध का ज्ञान नितान्त आवश्यक है।

→ स्वभाव प्रतिबन्ध दो प्रकार का होता है - तादात्म्य लक्षण और तदुत्पत्ति लक्षण। प्रमाणवार्तिक में धर्मकीर्ति ने लिखा है कि साध्य और साधन में व्याप्ति या अविनाभाव का विनिश्चय केवल दो आधारों पर होता है - तादात्म्य लक्षण और तदुत्पत्ति लक्षण (कार्यकारण भाव) के आधार पर।)

→ तादात्म्य संबंध - साधारणतः तादात्म्य का अर्थ 'अभेद' समझा जाता है, जैसे - 'क' और 'क' के संबंध को तादात्म्य संबंध कहा जाता है। किन्तु बौद्ध तादात्म्य को इस रूप में स्वीकार नहीं करते हैं। बौद्ध मतानुसार अत्यन्त भेद अथवा अत्यन्त अभेद की स्थिति में तादात्म्य संभव नहीं होता। कलश और घट में तादात्म्य संबंध नहीं बल्कि पर्यायवाची संबंध है। इसी प्रकार 'क' और 'क' का संबंध भी तादात्म्य संबंध नहीं क्योंकि इसमें अत्यन्त अभेद है। दूसरी तरफ 'अश्व' और 'गौ' में भी तादात्म्य तादात्म्य संबंध संभव नहीं क्योंकि दोनों में अत्यन्त भेद है। अतः साधन (हेतु)-साध्य में अत्यन्त अभेद अथवा अत्यन्त भेद होता है वहाँ तादात्म्य संबंध नहीं होता। साध्य और साधन में

Scanned with CamScanner

सामानाधिकरण्य पाया जाता है साध्य साधन और साध्य का तादात्म्य है। इस प्रकार जब दो वस्तुओं (साधन और साध्य) में सामान्य धर्म पाया जाता है तो उन दोनों वस्तुओं में तादात्म्य संबंध संभव होता है।

→ तदुत्पत्ति → तदुत्पत्ति को कार्य-कारण भी कहा जाता है। जैसे - 'पर्वत अग्निमान है धूम्र होने से', इसमें साधन धूम्र साध्य अग्नि का कार्य है तथा अग्नि (साध्य) धूम्र (साधन) का कारण है। कारण के बिना कार्य की सत्ता नहीं होती इसलिये कारण (अग्नि) के अभाव में कार्य (धूम्र) के कहीं भी न पाये ~~जाने~~ जाने (अविनाभाव) का निर्णायक कार्यकारण भाव या तदुत्पत्ति माना जा सकता है।

→ कुछ मतानुसार दो वस्तुओं के बीच तदुत्पत्ति अथवा कारणता का ज्ञान पंचकारणि से होता है। ~~पंचकारणी के~~ पंचकारणि के पाँच चरण हैं -

(i) कारण के उत्पत्ति के पूर्व कार्य का अदर्शन (अनुपलम्भ), यथा - अग्नि की उत्पत्ति के पूर्व धूम्र की सत्ता का ज्ञान नहीं होना।
(ii) कारण का दर्शन, यथा - अग्नि की सत्ता का ज्ञान होना।
(iii) कारण के दर्शन के अन्तर तत्काल कार्य का दर्शन, यथा - अग्नि के दर्शन के उपरांत तत्काल धूम्र का दर्शन।
(iv) कारण का लोप, यथा - अग्नि की सत्ता का लोप।
(v) कार्य का लोप, यथा - धूम्र की सत्ता का लोप।

→ बौद्ध का इस पंचकरणि से ऐसा स्पष्ट होता है कि बौद्ध पाश्चात्य दार्शनिक मिल की भाँति कारण को नियत, पूर्वकालिक आनन्तर्य उपाधिक घटना मानते हैं। साथ ही, यह भी कि बौद्ध कारणता को अन्वय-व्यतिरेक विधि द्वारा स्थापित करना चाहते हैं।

Scanned with CamScanner